International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp.139-142

B.Ed एवं D.El.Ed में शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण का महत्व

विपिन कुमार वशिष्ठ*

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के संज्ञान के पदों को खोलने का एक उपाय है। पर शिक्षा के विस्तार के साथ–साथ अधिकांश शिक्षित व्यक्ति भी यह नहीं जानते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है? प्रायः लोग शिक्षा को नौकरी प्राप्त करने का साधन मानते हैं। पर शिक्षा के उद्देश्यों की आवश्यकता शिक्षा के हर स्तर पर पड़ती है। यह आवश्यकता शिक्षा प्रदान करने वालों और शिक्षा ग्रहण करने वाले दोनों ही लोगों को होती है। अतः इनका ज्ञान शिक्षक एवं छात्र दोनों के लिये आवश्यक है। शैक्षिक उद्देश्यों को प्रायः निर्देशन उद्देश्य (Instructional Objective) या शैक्षिक उद्देश्य (Educational Objective) के नाम से जाता जाता है। इनका निर्माण आधारभूत दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुरूप होना चाहिए–

उद्देश्यों का सर्वप्रथम प्रयोग 1918 ई० में बोबील महोदय ने किया था। भारत में उद्देश्यों का एक लक्ष्य एक ही माना गया था 1967 ई० में उद्देश्य एक लक्ष्य को अलग–अलग किया गया था। लक्ष्य के लिए ळवंस शब्द का प्रयोग उद्देश्य के लिए व्इरमबजपअम शब्द प्रयोग किया।

शैक्षिक उद्देश्यों का अर्थ

उद्देश्य वह साधन है जिसके माध्यम से छात्र पाठ्यक्रम रूपी मार्ग पर चलकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है।

शैक्षिक उद्देश्य की परिभाषाएँ

शैक्षिक उद्देश्यों को विभिन्न मनोवैज्ञानिक ने निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है–

- **बी० एस० ब्लूम–** ''शैक्षिक उद्देश्य मात्र वे लक्ष्य नहीं होते जिनकी सम्प्राप्ति हेतु पाठ्यचर्चा की संरचना की जातियों और शिक्षण या अनुदेश निर्देशित होता है।''
- **हॉसटन के अनुसार** '' (Hostan 1970) . एक शैक्षिक उद्देश्य व्यवहार रूप से प्रगट एक क्षमता या निपुणता है जो शिष्य वहाँ अर्जित या विकसित करते हैं। जहाँ शिक्षण करने में सफल है जिसे करने के लिए उसे प्रतिपादित किया गया है।

शैक्षिक उद्देश्यों के प्रकार

शैक्षिक उद्देश्यों को दो भागों में बाँटा गया है–

- सामान्य उद्देश्य
- विशिष्ट उद्देश्य

* शोधार्थी, लार्डस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

सामान्य उद्देश्यों का अर्थ

''ऐसे उद्देश्य जिनकी प्राप्ति सामान्यतः एक कक्षा कक्ष (कालांश) में नहीं हो पाती है। सामान्य उद्देश्य कहते हैं।

सामान्य उद्देश्यों की विशेषताएँ

- इनको सरलता से प्राप्त नहीं किया जा सकता अप्राप्त उद्देश्य कहते हैं।
- इनको प्राप्त करने में समय अधिक लगता है। अतः इन्हें दीर्घकाल/व्यापक उद्देश्य कहते हैं।
- सामान्य उद्देश्य विषय से सम्बन्धित होते हैं–

जैसे–ज्ञान, बोध, आर्थसर्य, प्रयोग, कौशल, अथिवृत्ति है तक है आदि ये सामान्य उद्देश्य।

विशिष्ट उद्देश्यों का अर्थ

''ऐसे उद्देश्य जिनकी प्राप्ति सामान्यत एक कक्षा कक्ष (कालांश) में हो जाती है, विशिष्ट उद्देश्य कहलाते हैं।''

विशिष्ट उद्देश्यों की विशेषताएँ

- इनको आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिए इन्हें प्राप्त उद्देश्य भी कहते हैं।
- इनको प्राप्त करने में समय कम लगता है इसलिए इन्हें अल्पकालीन उद्देश्य कहते हैं।

जैसे– प्रत्यास्मरण, प्रत्याविज्ञान, प्रत्याविरण आदि

जैसे– भारत की राजधानी दिल्ली

उत्तर– नई दिल्ली।

अतः शैक्षिक उद्देश्यों को विकसित करते समय निम्नांकित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

- बालक की आवश्यकताएँ तथा क्षमताएँ
- समाज की आवश्यकताएँ तथा आशाएँ
- विषय–वस्तु का स्वरूप।

शैक्षिक उद्देश्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास 20वीं शताब्दी के छठें दशक में कुछ विद्वानों ने किया। सन् 1956ई० में "Benjamin S. Bloom" तथा उनके सहयोगियों ने शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण अपनी पुस्तक'' Taxonomy & Educational objectives. The classification of Educational Goals में किया था। इन्होंने शैक्षिक उद्देश्यों को तीन भागों में बाँटा था।

- ज्ञानात्मक पक्ष Cognitive Domain
- भावात्मक पक्ष Effective Domain
- क्रियात्मक पक्ष Psychology Domain

शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण

शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण B.S. Bloom ने किया था। ये अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय के प्रा० B.S. Bloom ने अपनी पुस्तक ज्पगवदवउल of Education objective में किया इन्होंने इसे 3H आधार पर उद्देश्य के तीन प्रकार बताए।

Head
3H Heart
Hand

	ज्ञानात्मक पक्ष उद्देश्य Head	भावात्मक उद्देश्य पक्ष Heart	क्रियात्मक पक्ष/क्षेत्र Hand
	1956 Head B.S. ब्लूम	ब्लूम, कैथवाल, मसीहा 1964	सिम्पसन 1969
निम्न स्तर	• ज्ञान • अवबोध • ज्ञानोपयोग	• आग्रहण/ग्रहण करना/ध्यान करना • अनुक्रिया • अवमूल्यन/मूल्य निर्धारण	• उद्दीपन • क्रिया करना /हस्त कौशल • नियंत्रण
मध्य स्तर	विश्लेषण संश्लेषण	• विचार करना • व्यवस्थापन संचालन	• समायोजन • स्वाभीकरण
उच्च स्तरीय	मूल्यांकन	• चरित्र निर्माण	• आदतनिर्माण/ कौशल

इन 18 उद्दश्यों में सर्वप्रथम परिवर्तन ''एंडरसन ने किया। ब्लूम ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर दैनिक पाठ्य योजना के उद्देश्यों में से केवल 6 उद्देश्यों को लिया था।

ज्ञानात्मक पक्ष– निम्न स्तरीय (3) ज्ञान, बोध, प्रयोग

भावात्मक पक्ष– मध्य स्तरीय (2) अभिरूचि/विचार करना, अभिवृत्ति/व्यवस्थापन

क्रियात्मक पक्ष– उच्च स्तरीय (1) कौशल/आदत निर्माण

कुल– 06 उद्देश्य दैनिक पाठ्य योजना में शामिल किये गये थे।

ज्ञान का अर्थ

पहचान करना ही ज्ञान कहलाता है सत्य को सिद्ध या करना ज्ञान कहलाता है

जैसे– एक बार सुनना, पढ़ना, बोलना, सूत्र पहचानना, चित्र पहचानना, मानचित्र पहचानना, प्रतित चिन्ह, संकेत आदि पहचान, परिभाषा याद करना, सूत्र याद करना, कविता याद करना, नियम याद करना, सिद्धान्त याद करना, आदि स्मरण करना है।

ज्ञान के प्रकार होते हैं–

- प्रत्यास्मरण
- प्रत्याभिज्ञान

प्रत्यास्मरण का अर्थ

ऐसा ज्ञान जो स्मृति पर आधारित जो प्रत्यास्मरण कहलाता है। जैसे–किंडरगार्टन विधि के जनक कौन है–फ्रोबेल

प्रायाविज्ञान का अर्थ

''ऐसा ज्ञान को देखने पर आधारित, प्रत्याविज्ञान कहलाता है।

- जैसे–मनुष्य के कितने कान होते हैं। – 2
- गाय के कितने टांगे होते हैं। – 4
- हमारे कितने हाथ होते हैं। – 2

अब बोध का अर्थ

''ज्ञान के सर्वश्रेष्ठ रूप को अवबोध कहते हैं।

जैसे– बार–बार सुनना, बोलना, पढ़ना, अंतर खोजना, तुलना करना, वर्गीकरण करना, सम्बन्ध स्थापित करना, समस्या के कारणों का पता लगाना, विभेद करना, भिन्नता, बताना, समानता निकालना, व्याख्या करना आदि अवबोध है।

- **ज्ञानोपयोग/प्रयोग का अर्थ–** ''सीखे गए ज्ञान का नवनि परिस्थिति में उपयोग करना या किसी अन्य परिस्थिति में उपयोग करना हो ज्ञानोपयोग कहलाता है।

जैसे–निर्णय लेना, विचार प्रस्तुत करना, भाषण देना, निर्देश देना, सुझाव देना, सलाह देना, सम्प्रत्तय निर्माण करना, दैनिक पाठ्य योजना बनाना, स्वयं प्रश्नों का निर्माण करना नियोजन, समस्या का हल खोजना, निष्कर्ष निकालना, सच के उदाहरण देना, स्वयं के नियम बनाना आदि ज्ञानोपयोग है।

- **अभिरूचि :–** जिस क्रिया को करने में मजा आये उसे अभिरूचित कहते हैं।

जैसे– सीखने में रूचि लेना, कक्षा में निरन्तर उपस्थित रहना, कक्षा में अधिक से अधिक प्रश्न करना, सम्बन्धित पुस्तक पढ़ना पुस्तकालय का उपयोग करना, पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ना, वाचनालय का उपयोग करना आदि अभिरूचि है।

- **अभिवृत्ति (Attitude) देखने का नजरिया**

सकारात्मक दृष्टिकोण एवं नकारात्मक दृष्टिकोण

सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना, उचित दृष्टिकोण अपनाना आदर करना, सम्मान करना, महत्व देना, एकता का विकास करना, भावनात्मक विकास करना, घृणा करना, ईर्ष्या करना, धारणा का विकसित करना, सोच उत्पन्न करना आदि अभिवृत्ति है।

- **कौशल**

क्रियात्मक स्वरूप विकसित करना, चित्र बनाना, रंग भरना, मानचित्र बनाना, मानचित्र भरना, श्यामपट्ट पर लिखना, सुलेख का विकास करना, कविता का सस्वर पाचन करना, अभिनप करना, प्रदर्शन करना, हाव–भाव प्रदर्शित करना, अनुशासन स्थापित करना, कक्षा पर नियंत्रण रखना।

सहायक सामग्री करना, प्रयोगशाला में प्रयोग करना, प्रयोग का प्रदर्शन करना, चार्ट बनाना, मांडल बनाना, समस्त क्रियाएँ कौशल में शामिल है।

लक्ष्य एवं उद्देश्यों में अंतर

लक्ष्य/Goal/Aim	**उद्देश्य** Objectives
• ये साध्य होते हैं।	• उद्देश्य साधन होते हैं।
• इनका क्षेत्र व्यापक होता है।	• इनका क्षेत्र सीमित होता है।
• ये सामान्यतः परिवर्तित नहीं होते।	• ये परिवर्तित होते रहते हैं।
• ये आदर्शवादी होते हैं।	• ये व्यवहारिक होते हैं।
• ठनका सम्बन्ध सम्पूर्ण पाठयचर्या से होता है	• इनका सम्बन्ध पाठ्यवस्तु/ पाठ्यक्रम से
• ये दीर्घकालिन होते हैं	• ये अल्पकालीन होते हैं
• ये इकाई में होते हैं।	• ये बहु संख्यक होते हैं।
• लक्ष्य का मूल्यांकन नहीं होता है।	• इनका मूल्यांकन होता रहता है।
• इनका सम्बन्ध शिक्षा से होता है।	• इनका संबंध शिक्षण से है
• लक्ष्य के प्राप्ति उद्देश्यों के माध्यम से होता है।	• उद्देश्य लक्ष्य में समाहित होता है आदि

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चौहान, रीता (2014–15) ''शिक्षा तकनीकी'' अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
2. पी०डी०, पाठक (2007) ''शिक्षा तकनीकी'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. डा० एस०पी० कुलश्रेष्ठ के अनुसार– ''शिक्षा तकनीकी के मूल तत्व''

❖◆❖